स्त्री–संघर्ष एवं चेतना के विकास में शिक्षा की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अनामिका कुमारी

शिक्षा मानव जीवन के महानतम उपलब्धियों में से एक है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा बुद्धि का विकास कर उसे आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक कार्य करने योग्य बनाती है। चेतना के विकास में भी शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। चाहे पुरूष वर्ग का चेतना हो या महिला वर्ग का चेतना हो सबको गतिशीलता शिक्षा के द्वारा ही प्राप्त होती है।

स्त्री–चेतना तथा संघर्ष के विकास–मार्ग में रूढ़ियों, परम्पराओं, अंधविश्वासों आदि को अवरोधक माना गया है जिसपर अनवरत रोष भी प्रगट किए गए हैं। यह सच है कि सवर्ण स्त्री एवं दलित स्त्री दोनों पुरूष वर्चस्व की जकड़न में जब्त है किन्तु दलित स्त्री का दर्द कई स्तरों में और भी भयावह है। सवर्ण स्त्रियों के मुकाबले दलित स्त्रियों के शिक्षा के अनुपात नगण्य हैं। भारतीय सभ्यता और संस्कृति को बरकरार रखने का दायित्व स्त्री को वहन करना पड़ा है, स्त्री को इसके लिए सारी मर्यादाओं का पालन करना पड़ता है। यद्यपि समाज में महिलाओं को उपेक्षित होना पड़ा हो परन्तु वास्तविकता इस बात की है कि स्त्री–चेतना के अभाव में समाज में यथोचित बदलाव कदापि संभव नहीं है।